# इकाई 5 शुक्रचार

**इकाई की रूपरेखा**


5.0 उद्देश्य

5.1 प्रस्तावना

5.2 शुक्रचार का परिचय

5.2.1 शुक्र का स्वरूप

5.2.2 शुक्र के वर्ण का लक्षण और फल

5.3 शुक्र के नव वीथि ,तीन मार्ग और छः मण्डलों का वर्णन

5.3.1 शुक्र के प्रथम और द्वितीय मण्डल का लक्षण और फल

5.3.2 शुक्र के तृतीय और चतुर्थ मण्डल का लक्षण और फल

5.3.3 शुक्र के पंचम और षष्ठ मण्डल का लक्षण और फल

5.4 शुक्र के नक्षत्र भेदन का फल

5.4.1 कृतिका से मघा पर्यन्त शुक्रभेदन का फल

5.4.2 पूर्वाफाल्गुनी से मूल पर्यन्त शुक्रभेदन का फल

5.4.3 पूर्वाषाढ़ा से भरणी पर्यन्त शुक्रभेदन का फल

5.5 सारांश

5.6 शब्दावली

5.7 सन्दर्भ ग्रंथ

5.8 बोधप्रश्न


## 5.0 उद्देश्य

शुक्रचार नामक इस इकाई का अध्ययन कर लेने के बाद आप :

- शुक्रचार का परिचय दे सकेगें।
- शुक्र के उदय और अस्त फल का उल्लेख कर सकेगें।
- शुक्र के वर्ण का लक्षण और फल का परिचय दे सकेगें।
- शुक्र के मण्डल का लक्षण और फल समझा सकेंगे।
- शुक्र के नक्षत्र भेदन का फल समझा सकेगें।

## 5.1 प्रस्तावना

प्रिय अध्येता ! शुक्रचार नामक इस इकाई में स्वागत है। इसके पूर्व की इकाई में आप वृहस्पति चार का अध्ययन कर चुके हैं। इस इकाई में शुक्रचार से सम्बन्धित सभी विषयों का अध्ययन करेंगे ज्योतिषशास्त्र में शुक्र ग्रह को बहुत ही महत्वपूर्ण ग्रह माना गया है, इसको शुभ ग्रह की

श्रेणी में रखा गया है। ज्योतिषशास्त्र में शुक्र को असुर गुरु कहा गया है परन्तु यह शुभ फल को देते हैं। संहिता शास्त्र में शुक्र का उदय और अस्त का वर्णन बहुत ही विस्तार पूर्वक किया गया है । शुक्र का उदय ऐसे तो शुभकारी होता है ,परन्तु विशेष नक्षत्रों में विशेष राशियों पर अशुभकारी भी होता है। शुक्र का उदय यदि दिन में होता है तो दुर्भिक्ष, रोग तथा राजाओं का नाश करने वाला होता है।

संहिता शास्त्र में शुक्र के वर्ण का लक्षण और उसके फल उल्लेख किया गया है। शुक्र के विषय में कहा गया है कि यदि वृहस्पति से परस्पर सप्तम राशि में स्थित हो तो रोग और अनेक प्रकार के भय से प्रजा बाढ़ पीड़ित होते हैं तथा अकाल होता है ,यदि शुक्र का वर्ण अग्नि के समान हो तो अग्नि का भय लाल हो तो शस्त्र का भय, तोते के समान हो तो श्वास रोग का भय होता है। इसी प्रकार यदि शुक्र वर्ण कुमुद पुष्प या चंद्रमा की तरह कांति वाला तथा स्पष्ट सुंदर दिखने वाला हो तो सत्य युग की तरह होता है अर्थात् रोग दारिद्र्य और शोक से लोग रहित होते हैं। शुक्र के नव वीथियों, तीन मार्गो ,तथा छः मंडलों का वर्णन किया गया है जिसका अध्ययन आप करेंगे। शुक्र के नक्षत्र भेदन का भी फल बताया गया है कि यदि शुक्र कार्तिक आदि से भरणी पर्यंत भेदन करें तो क्या क्या फल हो सकता है इस विषय में आप अध्ययन करेंगे। इस प्रकार से शुक्रचार सम्बन्धी सभी विषयों का भली भॉति अध्ययन इस इकाई में करेंगे।

## 5.2 शुक्रचार का परिचय

संहिता शास्त्र में शुक्रचार का बहुत ही बृहद् वर्णन किया गया है। सर्वप्रथम शुक्र को नव वीथी, तीन मार्ग, और छः मंडलों में विभक्त किया गया है। नव बीथियों में जिनका नाम नाग, गज, ऐरावत, वृष, गो ,जरद्गव, मृग, अज, और दहन है। प्रत्येक वीथियों में तीन - तीन नक्षत्रों का समावेश किया गया है ,जैसे नाग बीथी में अश्वनी भरणी और कृतिका है, गज बीथी में रोहिणी , मृगशिरा और आर्द्रा है, एरावत बीथी में पुनर्वसु ,पुष्य और आश्लेषा है ,वृष बीथी में मघा, पूर्वाफाल्गुनी और उत्तराफाल्गुनी है, गो बीथी में हस्त ,चित्रा और स्वाति है, जरद्गव बीथी में विशाखा अनुराधा और ज्येष्ठा है, मृग बीथी में मूल पूर्वाषाढ़ा और उत्तराषाढ़ा है, अज बीथी में श्रवण धनिष्ठा और शतभिषा है, दहन बीथी में पूर्वा भाद्रपद, उत्तराभाद्रपद और रेवती नक्षत्र है। इन विधियों का प्रभाव पृथ्वी पर रहने वाले मानवों के ऊपर पड़ता है। इसी प्रकार तीन मार्ग है जिसमें भरणी आदि नव नक्षत्र अर्थात् भरणी, कृतिका, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा पुनर्वसु ,पुष्य , आश्लेषा और मघा ये उत्तर मार्ग में हैं। मध्यम मार्ग में पूर्वाफाल्गुनी आदि नव नक्षत्र जैसे पूर्वाफाल्गुनी उत्तराफाल्गुनी ,हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा और मूल नक्षत्र हैं। दक्षिण मार्ग में नव नक्षत्र हैं जैसे पूर्वाषाढ़ा, उत्तराषाढ़ा, श्रावण ,धनिष्ठा, शताभिषा, पूर्वाभाद्रपद ,उत्तराभाद्रपद ,रेवती और अश्विनी नक्षत्र हैं। इसी प्रकार छः मंडलों में शुक्र के चार को विभक्त किया गया है। जिसमें पहले मण्डल में भरणी से 4 नक्षत्रों को रखा गया है - भरणी कृतिका, रोहिणी, और मृगशिरा नक्षत्र है। जिनका फल पृथ्वी पर मनुष्यों के लिए शुभाशुभ होता है जिनका विवेचन आगे किया जाएगा। द्वितीय मण्डल में आर्द्रा से 4 नक्षत्र है जैसे आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, और आश्लेषा नक्षत्र हैं। तृतीय मण्डल में 5 नक्षत्र है जैसे मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, हस्त और चित्रा नक्षत्र है। चतुर्थ मण्डल में 3 नक्षत्र है जैसे स्वाति ,विशाखा और अनुराधा नक्षत्र है। पंचम मण्डल में 5 नक्षत्र है जैसे ज्येष्ठा, मूल ,पूर्वाषाढ़ा, उत्तराषाढ़ा और श्रवण नक्षत्र है। षष्ठ मण्डल में 6 नक्षत्र है जैसे धनिष्ठा ,शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, रेवती और अश्विनी नक्षत्र है। इस प्रकार से नव वीथियोँ में तीन मार्गो में तथा 6

मण्डलों में विभक्त किया गया है। ऐसे तो शुक्र का चार विविध नक्षत्रों में विविध राशियों में तथा विविध ग्रहों के साथ होता है परन्तु यदि शुक्र ग्रह सूर्यास्त के पहले दिख जाए तो पृथ्वी पर रहने वाले प्राणियों के लिए अशुभकारी होता है। इसी प्रकार से नक्षत्रों के भेदन से शुक्र का फल कहा गया है अर्थात् कृतिकादि नक्षत्र को भेदन करने से शुक्र का क्या फल होगा इसका अध्ययन आगे करेंगे। यदि चतुर्दशी अमावस्या और अष्टमी तिथि में शुक्र का उदय- अस्त होता है तो उनका भी फल होता है। जैसे कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी अमावस्या और कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि में शुक्र का उदय और अस्त होता है तो पृथ्वी जल से परिपूर्ण हो जाती है अर्थात् पृथ्वी पर जल का भण्डार बना रहता है। इसी प्रकार शुक्र के अस्त काल में विविध मुहूर्तों का अभाव हो जाता है जैसे यदि शुक्र अस्त को प्राप्त हो जाए तो बावली ,उपवन, तालाब, कुआं ,और गृह का आरंभ नहीं करना चाहिए। कोई भी नव निर्माण, देव प्रतिष्ठा, गृह प्रवेश, और शिवरात्रि आदि व्रतों का आरंभ नहीं करना चाहिए। शुक्र यदि अस्त हो तो व्रत का उद्यापन वधू प्रवेश षोडश महादान ,सोम यज्ञ ,अष्टका श्राद्ध, गोदान, केशांत कर्म, नवान्न भक्षण ,पोखरा ,प्याऊ, प्रथम श्रावणी कर्म, महा नवमी व्रत और वेद का आरंभ नहीं करना चाहिए। शुक्र यदि अस्त प्राप्त हो तो नीलोत्सर्ग, समय पर नहीं हुए बालकों का संस्कार ,गुरु से मंत्र ग्रहण करना ,उपनयन ,विवाह, प्रथम देवता दर्शन, तीर्थ गमन, संन्यास, अग्निहोत्र ,राजा का दर्शन, राज्याभिषेक, यात्रा, समावर्तन, कर्णवेध,और दिव्य परीक्षा नहीं करनी चाहिए। विशेषकर विवाह उपनयन इत्यादि का त्याग कर देना चाहिए ।यही नहीं शुक्र यदि बालकत्व को या वृद्धत्व को प्राप्त हो जाए तो भी उपर्युक्त सभी शुभ कार्य नहीं करना चाहिए।

ग्रहभक्तियोगाध्याय में शुक्र के प्रदेश और उनके व्यक्तियों का उल्लेख किया गया है। तक्षशिला नगरी, मार्तिकायत देश, बहुगिरि, गान्धार, पुष्कलावतक, प्रस्थल, मालव, कैकेय, दाशार्ण, उशीनर, शिवि, वितस्ता, ऐरावती और चन्द्रभागा नदी के जल पीने वाले, रथ, चान्दी हाथी, घोड़ा, महामात्र ( हाथी के अधिपति), धनी, सुगन्ध द्रव्य, पुष्प, चन्दन, मणि , हीरा, आभूषण, शय्या, प्रधान, युवा, स्त्री, कामोपकरण ( पुष्प, धूप, माला, चन्दन आदि ), मधुर भोजन करने वाले, उद्यान, जल, कामी, यशस्वी, सुखी ,दाता, सुन्दर, विद्वान्, मन्त्री, क्रय-विक्रय से जीवनयात्रा चलाने वाले, कुम्भार, चित्राण्डन ( नाना प्रकार के पक्षी ), फलय ( पुला, लव, कोल), कौशेयपट (नेत्रपट ), कम्बल, रोध, पत्र ( सुगन्ध पत्र ), नारिकेल, जाती फल (जाय फल ), पिप्पली ( पीपर) चन्दन इन सभी का स्वामी शुक्र है।

### 5.2.1 शुक्र का स्वरूप

सौरमण्डल मे शुक्र को सर्वाधिक तेज युक्त ग्रह कहा गया है। शतपथ ब्राह्मण में कहा गया है कि- "स एव शुक्रः यो हि चमत्कृतः" सर्वाधिकः पुराणों में भी शुक्र को सबसे ज्यादा चमकने वाला ग्रह बताया गया है। शुक्र ग्रह को अनेकानेक नामों से जाना जाता है। संस्कृतवाङ्गमय में शुक्र ग्रह को सित, भृगु, भृगुपुत्र, दैयमंत्री, दैत्याध्यक्ष, दैत्य पुरोहित, उशना ,भार्गव ,काव्य, दैत्यगुरु , आस्फुजित, सतपर्वेश, मघाभू ,श्वेत, श्वेतरथ, कवि आदि से जानते हैं।

पुराणों में शुक्र के विषय में कहा गया है कि ब्रह्माजी के मानस पुत्र भृगु ऋषि का विवाह प्रजापति दक्ष की कन्या ख्याति से हुआ जिससे दाता, विधाता दो पुत्र और श्री नाम की कन्या का जन्म हुआ। भागवत पुराण के अनुसार भृगु ऋषि के कवि नाम के पुत्र भी हुए जो कालांतर में शुक्राचार्य नाम से प्रसिद्ध। वामन पुराण में कहा गया है कि दानव राज अंधकासुर और महादेव के मध्य घोर युद्ध चल रहा था अंधक के प्रमुख सेनानी युद्ध में मारे गए पर भार्गव ने

अपनी संजीवनी विद्या से पुनः जीवित कर दिया पुनः जीवित होकर कुंभज आदि दैत्य फिर से युद्ध करने लगे इस पर नंदी आदि गण महादेव से कहने लगे कि जिनको को हम मार गिराते हैं उन्हें दैत्य गुरु संजीवनी विद्या से पुनः जीवित कर देते हैं ऐसे में हमारे बल का क्या महत्व है। यह सुनकर महादेव ने दैत्य गुरु को अपने मुख में निगल कर उदरस्त कर लिया। उदर में जाकर कवि ने शिव की स्तुति आरंभ कर दी जिससे प्रसन्न होकर शिव ने उनको बाहर निकालने की अनुमति दे दी। भगवान शिव ने हंस कर कहा कि मेरे उदर में होने के कारण तुम मेरे पुत्र हो गए हो अतः मेरे शिश्न से बाहर आ जाओ आज से समस्त चराचर जगत तुमको शुक्र के नाम से जानेगें। तब से कवि शुक्राचार्य के नाम से विख्यात हुए। मत्स्य पुराण के अनुसार शुक्र का श्वेत वर्ण है गले में माला है उनके चारों हाथों में दंड रुद्राक्ष की माला पात्र व वर मुद्रा है शुक्र की जलीय प्रकृति है स्कंद पुराण में शुक्र को वर्षा लाने वाला ग्रह कहा गया है। दैत्यों का गुरु होने के कारण इनकी भोग विलास की प्रकृति है।

अब ज्योतिष शास्त्रीय दृष्टि से शुक्र का स्वरूप जानेंगे। शुक्र का मण्डल क्रांतिवृत्त मण्डल से उत्तर और दक्षिण 120 कला परम सर अंतरित होते हैं। सिद्धांत शिरोमणि के अनुसार 130 कला है। शुक्र अपनी कक्षा में सूर्य के ही समान 59 /8 मध्यम गति से भ्रमण करते हैं। शुक्र एक महा युग में 432 0000 भगण को प्राप्त करते हैं। अर्थात् शुक्र भगण और सूर्य भगण एक महा युग में समान है। शुक्र का शीघ्रोच्च भगण एक महा युग में 7022 376 योजन है। मन्दोच्च भगण एक कल्प में 535 है। भूमि से शुक्र की दूरी 421316 योजन है। उनकी कक्षा प्रमाण 4331500 योजन है। शुक्र ग्रह स्पष्ट साधन के लिए मंद फल तथा शीघ्र फल के संस्कार से स्पष्ट होते हैं। मंदफल साधन के लिए मंद परिधि विषम पदान्त में 11 अंश , समपदान्त में 12 अंश है। शीघ्र फल साधन के क्रम में शुक्र की शीघ्र परिधि विषम पदान्त में 260 अंश समपदान्त में 262 अंश है। वक्र के आरंभ में शीघ्र केंद्रांश 163 और मार्ग के आरंभ में शीघ्रकेद्रांश 197 है।

आधुनिक सिद्धांत एवं वैज्ञानिक दृष्टि से शुक्र सूर्य से सबसे निकटवर्ती ग्रह है। सूर्य से शुक्र की दूरी 108 000000 किलो मीटर है। शुक्र पिंड का ब्यास मान 12104 किलो मीटर है। शुक्र अपने कक्षा में अक्ष भ्रमण 243 करते है, तथा शुक्र को सूर्य के चारों ओर भ्रमण करने में 225 दिन लगाते हैं। इनका कोई भी उपग्रह नहीं है। इनका तल चट्टानों से ज्वालामुखियों से व्याप्त है, वायुमण्डल में 95 प्रतिशत कार्बनडाई ऑक्साइड नामक गैस है सबसे कम मात्रा में नाइट्रोजन गैस है। इसकी कक्षा लगभग वृत्ताकार है यह अन्य ग्रहों के विपरीत दक्षिणावर्त आक्रमण करता है। अब शुक्र के समस्त गुणों को प्रदर्शित किया जा रहा है।

| | | |
|---|---|---|
| गृह राशि | - | वृष, तुला |
| उच्च राशि | - | मीन |
| नीच राशि | - | कन्या |
| मूलत्रिकोण | - | तुला |
| मित्र ग्रह | - | शनि, और बुध |
| समग्रह | - | मंगल, गुरु |
| शत्रु ग्रह | - | सूर्य ,चंद्र |
| अवस्था | - | 16 |

| | | |
|---|---|---|
| वर्ण | - | स्वच्छ |
| उदय प्रकार | - | शीर्षोदयी |
| आकृति विशेष | - | द्विपद |
| जाति | - | विप्र |
| लिंग | - | स्त्री |
| वास संस्थान | - | शयन स्थान |
| शरीर में धातु विशेष | - | शुक्र |
| रस | - | अम्ल |
| गुण | - | रज |
| अधि देवता | - | इन्द्र |
| प्रत्यधि देवता | - | इन्द्राणि |
| प्रकृति | - | कफ |
| ऋतु | - | वसन्त |
| कारक भाव | - | 7 |
| दशा वर्ष | - | 20 वर्ष |
| वेद | - | यजुर्वेद |
| स्वभाव | - | लघु |
| काल | - | पक्ष |
| लोक | - | पितृलोक |
| मूलादि संज्ञा | - | जीव |
| रत्न | - | हीरा |
| धातु | - | चांदी |
| वस्त्र | - | दृढ |
| अवतार | - | भार्गव |
| दृष्टि | - | कटाक्ष |
| वाहन | - | बृष |

### 5.2.2 शुक्र के वर्ण का लक्षण और फल

प्रिय अध्येता ! यहां शुक्र के वर्ण का लक्षण और फल का अध्ययन करेंगे । हम जानते हैं कि शुक्र सभी ग्रहों से चमकीला ग्रह है, शुक्र का बिंब हम नंगी आंखों से भी देख सकते हैं, प्रायः संध्याकाल में अथवा प्रातः काल में शुक्र दिखाई पड़ता है। शुक्र के बिंब का वर्ण यदि लाल , सफेद, तोते के समान, सुवर्ण के समान हो तो क्या-क्या फल हो सकता हैं ? इन्हीं का विवेचन हम करने जा रहे हैं। बृहत्संहिता में इसके विषय में लिखा है कि-

यदि शुक्र का वर्ण अग्नि के समान हो तो अनि का भय, रक्त हो तो शस्त्र का भय, कसौटी पर

घिसे हुये सुवर्ण की रेखा के समान हो तो रोग, तोते के समान या पीला हो तो श्वास और कास रोग की उत्पत्ति तथा भस्म की तरह रूक्ष या काला वर्ण तो वर्षा का आभाव होता है।

यदि दही, कुमुद पुष्प या चन्द्र की तरह कान्ति वाला, स्पष्ट विस्तृत बिम्ब बाला, विपुल मूर्त्ति वाला, सुन्दर गति वाला ( अवक्री), विकार रहित और शुक्र हो तो प्रजाओं को कृतयुग की तरह ( व्याधि, दारिद्रय और शोक)से रहित करता है

## 5.4 शुक्र के नव वीथी ,तीन मार्ग और छः मण्डलों का वर्णन

संहिता शास्त्र में शुक्र के नव वीथी, तीन मार्ग और छः मण्डल बताया गया है । इनमें भी मतान्तर है किन्ही अन्य अचार्य का मत है कि अश्विनी आदि तीन- तीन नक्षत्रों में क्रम से नाग, गज, ऐरावत, वृष, गो, जरद्गव, मृग अज, दहन, नव वीथियाँ होती हैं। प्रिय अध्येता आपके मन में जिज्ञासा उत्पन्न हो रही होगी कि वीथी क्या है? गमन मार्ग को वीथी कहा जाता है। संहिता में कहा गया है कि शुक्र नव वीथियों के अंतर्गत नक्षत्रों का भ्रमण करते हैं। जैसे अश्वनी ,भरणी और कृतिका में नाग वीथी, रोहिणी मृगशिरा और आर्द्रा में गज वीथी, पुनर्वसु, पुष्य और आश्लेषा में ऐरावत वीथी, मघा, पूर्वा फाल्गुनी और उत्तरा फाल्गुनी में वृष वीथी, हस्त, चित्र और स्वाति में गो वीथी, विशाखा अनुराधा और ज्येष्ठा में जरद्गव वीथी, मूल पूर्वाषाढ़ा उत्तराषाढ़ा में मृग वीथी, श्रवण धनिष्ठा और शतभिश में अज वीथी तथा पूर्वा भाद्रपदा उत्तरा भाद्रपदा और रेवती में दहन वीथी होती है। परन्तु वराहमिहिर का मत है कि नव विधियों में क्रम से स्वाति भरणी और कृतिका में नाग बीथी , रोहिणी में मृगशिरा और आर्द्रा में गज वीथी, पुनर्वसु पुष्य और आश्लेषा में ऐरावत वीथी, मघा पूर्वाफाल्गुनी और उत्तराफाल्गुनी में वृष वीथी, अश्वनी रेवती पूर्वाभाद्रपद और उत्तराभाद्रपद में गो वीथी , श्रवण धनिष्ठा शतभिष में जरद्गव वीथी, अनुराधा ज्येष्ठा और मूल में मृग वीथी, हस्त विशाखा और चित्रा में अज वीथी तथा पूर्वाषाढ़ा उत्तराषाढ़ा में दहन वीथी होती है। वीथी चक्र नीचे दिया जा रहा है जिससे अध्ययन करने में सुलभता होगी।

**वीथी चक्र**

| वीथी | नाग | गज | ऐरावत | वृष | गो | जरद्गव | मृग | अज | दहन |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वराहमिहिर के अतिरिक्त मत में नक्षत्र | अ. | रो | पुन. | मघा. | ह. | वि | मृ. | श्र. | पू.भा. |
| | भ. | मृ | पु | पू.फा. | चि. | अ. | पू.षा. | ध. | उ.भा. |
| | कृ. | आ. | आश्ले. | उ.फा. | स्वा. | ज्ये. | उ.षा. | श. | रे. |
| वराहमिहिर का मत | भ. | रो | पुन. | मघा. | अ. | श्र. | अनु. | ह. | पू.षा. |
| | कृ. | मृ | पु | पू.फा. | पू.भा. | ध. | ज्ये. | चि. | उ.षा. |
| | स्वा. | आ. | आश्ले. | उ.फा. | उ.भा. | श. | मू. | वि. | |
| | | | | | रे. | | | | |

अब जो नव वीथीयां हैं उन वीथियों के मार्ग के बारे में बताया जा रहा है। पूर्व में नागादि जो नव बीथीयां हैं उनमें तीन तीन वीथियों के क्रम से उत्तर ,मध्य और दक्षिण मार्ग में स्थित होती हैं। जैसे नाग, गज और ऐरावत वीथी उत्तर मार्ग में ,वृष गो और जरद्गव वीथी मध्य मार्ग में, तथा मृग, अज और दहन वीथी दक्षिण मार्ग में स्थित होते हैं। इन तीन तीन वीथियों में भी एक एक क्रम से उत्तर, मध्य और दक्षिण मार्ग में विभाजित किया गया है। जैसे नाग वीथी उत्तर मार्ग में, गज वीथी मध्य मार्ग में, ऐरावत वीथी दक्षिण मार्ग में, वृष वीथी उत्तर मार्ग में ,गो वीथी मध्य मार्ग में, जरद्गव वीथी दक्षिण मार्ग में ,मृग वीथी उत्तर मार्ग में, अज वीथी मध्य मार्ग में और दहन वीथी दक्षिण मार्ग में स्थित है। अब इनका भी विभाग किया गया है। जैसे नाग वीथी उत्तरोत्तर मार्ग में, गज वीथी उत्तर मध्य मार्ग में, ऐरावत वीथी उत्तर दक्षिण मार्ग में। वृष वीथी मध्योत्तर मार्ग में, गो वीथी मध्य मार्ग में।,जरद्गव वीथी मध्य दक्षिण मार्ग में, मृग वीथी दक्षिणोत्तर मार्ग में, अज वीथी दक्षिण मध्य मार्ग में , और दहन वीथी दक्षिण मार्ग में स्थित है। ज्योतिषशास्त्र में मातान्तर के विषय में कथन है कि ज्योतिषशास्त्र आगम शास्त्र है इसको आगम के बिना नहीं जान सकते अतः इसमें स्वयं संदेह करना ठीक नहीं होता। क्योंकि सभी ऋषि त्रिकालदर्शी थे यह नहीं कह सकते हैं है कि किस ऋषि का कैसा आगम था अतः सबके लिए सभी ऋषियों का मत जानना आवश्यक हो जाता है।इनका भी स्पष्ट चक्र नीचे दिया जा रहा है जिससे अध्ययन करने में सुलभता होगी।

**वीथीमार्ग चक्र**

| वीथी | नाग | गज | ऐरावत | वृष | गो | जरद्गव | मृग | अज | दहन |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वीथियों की दिशा | उत्तर | | | मध्य | | | दक्षिण | | |
| | उत्तर | मध्य | दक्षिण | उत्तर | मध्य | दक्षिण | उत्तर | मध्य | दक्षिण |
| | उत्तरोत्तर | उत्तरमध्य | उत्तरदक्षिण | मध्योत्तर | मध्यमध्य | मध्यदक्षिण | दक्षिणोत्तर | दक्षिणमध्य | दक्षिणदक्षिण |

## 5.4.1 शुक्र के प्रथम और द्वितीय मण्डल का लक्षण और फल

अब शुक्र के प्रथम तथा द्वितीय मण्डल का लक्षण और फल का अध्ययन करेंगे। प्रथम मण्डल में भरणी, कृतिका, रोहिणी और मृगशिरा नक्षत्र है। द्वितीय मण्डल में आर्द्रा पुनर्वसु पुष्य और आश्लेषा नक्षत्र है, जिनका लक्षण और फल जानेंगे। प्रिय अध्येता मंडलों का प्रमाणिक फल जानने के लिए संहिता शास्त्र में वर्णित जो मूल श्लोक हैं उन्ही के माध्यम से फल कथन कहा जा रहा है।

**प्रथम मण्डल फल**

**भरणीपूर्वं मण्डलमृक्षचतुष्कं सुभिक्षकरमाद्यम्।**
**बङ्गाङ्गमहिषवाह्लिककलिङ्ग देशेषु भयजननम् ॥**

**अत्रोणदितमारोहेद् ग्रहोऽपरो यदि सितं ततो हन्यात्।**
**भद्राश्वशूरसेनकयौधेयकोटिवर्षनृपान्॥**

शब्दार्थ- आद्यम् = प्रथम मण्डल, मण्डलमृक्षचतुष्काम् = भरणी, कृत्तिका,, रोहिणी, मृगशिर नक्षत्रों का प्रथम मण्डल, सुभिक्षकरम् = शुभकर, बङ्ग: = बंगाल प्रदेश, अङ्ग = अङ्ग प्रदेश, महिष: = महिष प्रदेश, बाह्लिकः = वाह्लिक प्रदेश, कलिङ्गः = कलिङ्ग प्रदेश, भयजननम् = भयदायक, सितम् = शुक्र उदितम् = उदय , अपर = अन्य, आरोहेद् = उपर

गिरता हुआ, ततो = तदा, भद्राश्वः = भद्राश्व प्रदेश के जन, शूरसेनः = शूरसेन प्रदेश के जन, यौधेयकः = यौधेयक जन, कोटिवर्षम् = यमकोटि वर्ष, नृपान् = राजा, हन्यात् = नाश करना।

भरणी से चार नक्षत्र ( भरणी, कृत्तिका, रोहिणी और मृगशिरा ) प्रथम मण्डल के होते हैं। यदि इस मण्डल में शुक्र का उदय या अस्त होता है तो संसार में सुभिक्ष अर्थात् शुभदायक होता है तथा अङ्ग प्रदेश, बङ्ग प्रदेश, महिष प्रदेश, बाह्लीक प्रदेश और कलिङ्ग प्रदेशों में भय होता है। यदि प्रथम मण्डल में उदित शुक्र के ऊपर कोई ग्रह हो तो भद्राश्व, शूरसेनक, यौधेयक और यमकोटिवर्ष देशों के राजाओं का नाश होता है।

द्वितीय मण्डल फल

**भचतुष्टयमार्द्राद्यं द्वितीयममिताम्बुसस्यसम्पत्त्यै।**
**विप्राणामशुभकरं विशेषतः क्रूरचेष्टानाम् ॥**

**अन्येनात्राक्रान्ते म्लेच्छाटविकश्वजीविगोमन्तान्।**
**गोनर्दनीचशूद्रान् वैदेहांश्चानयः स्पृशति।**

शब्दार्थ- आर्द्रा = आर्दा नक्षत्र, आद्यम् =प्रथम, भचतुष्टयम् = चार नक्षत्र (आर्द्रा ,पुनर्वसु ,पुष्य, अश्लेषा) , द्वितीयम् = द्वितीय मण्डल, अमितम् = अपरिमित, अम्बुः = जल, सस्य = धान्य, सम्पत्त्यै = सम्पत्ति, विप्राणाम् = ब्रह्मणों का, अशुभकरम् = अशुभफलदायक, विशेषतः विशेष रूप से, क्रूरचेष्टानाम् = दुष्ट स्वभाव ,अन्येन = अपर म्लेच्छा = म्लेच्छ जन, आटविका = वन में वास करने वाले, श्वजीविनः = घोडों से जीवन यापन करने वाले, गोमन्तः = विद्यमान गाय, गोनर्दा: = गोनर्द जन, नीचा: = अधम कर्म करने वाला, शूद्राः = शूद्र जन, वैदेहा: = वैदेह जन।

आर्द्रा से चार नक्षत्र ( आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य और आश्लेषा ) तक द्वितीय मण्डल होता है। यदि इस मण्डल में शुक्र का उदय या अस्त होता है तो अधिक वर्षा और आनाजों की विशेष उत्पत्ति होती है, पर ब्राह्मणों के लिए अशुभकारी और दुष्टों के लिए तो विशेष अशुभकारी होता है। यदि इसमें उदित शुक्र किसी अन्य ग्रह से आक्रान्त हो तो म्लेच्छ जन वन में निवास करने वाले, कुत्तों से आजीविका चलाने वाले, गाय रखने वाले, गोनर्द (पतंजलि की जन्मभूमि चिदम्बरम् में निवास करने वाले ), निम्न कर्म करने वाले, शूद्र, विदेह के देश (मिथिला क्षेत्र) में निवास करने वाले ये सभी सब उपद्रव से युक्त होते हैं अर्थात् परेशान होते है।

## 5.4.2 शुक्र के तृतीय और चतुर्थ मण्डल का लक्षण और फल

अब आप शुक्र के तृतीय तथा चतुर्थ मण्डल का लक्षण और फल का अध्ययन करेंगे। तृतीय मण्डल में मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, हस्त और चित्रा नक्षत्र है । चतुर्थ मण्डल में स्वाति, विशाखा और अनुराधा नक्षत्र है इन नक्षत्रों में शुक्र का यदि उदय अथवा अस्त होता है तो क्या फल प्राप्त होता है इस विषय में आप अध्ययन करेंगे।

तृतीय मण्डल फल

**विचरन् मघादिपञ्चकमुदितः सस्यप्रणाशकृच्छुक्रः।**
**क्षुत्तस्करभयजननो नीचोन्नतिसङ्करकरश्च ॥**

**पित्र्याद्येऽवष्टब्धो हन्त्यन्ये नाविकान् शबरशूद्रान्**
**पुण्ड्रापरान्त्यशूलिकवनवासिद्रविडसामुद्रान् ॥**

शब्दार्थ– मघादिपञ्चकम् = मघा ,पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, हस्त ,चित्रा नक्षत्र, विचरन् = चलते हुए, सस्यप्रणाशकृत् = अनाजों का नाश करना, क्षुद् = दुर्भिक्ष, तस्करः = चोर ,भयम् = भयप्रदान करना, जनयति = उत्पादन करना, नीचानाम् = कुपात्र जनों का , सङ्करकरश्च = वर्णसङ्कर, पित्र्याद्ये = मघादि नक्षत्र, अन्येन = अपर अवष्टब्धः = अवरुद्ध, अविकान् = अविस जन, शबरान् = शवर जन, शूद्रान् = शूद्र जन, पुण्ड्रा = पुण्ड्र जन, शूलिका: = शूलिक जन, वनवासिनः = वन में रहने वाले, द्रविडा: द्रविड जन, समुद्रा: = समुद्र के तीर पर वास करने वाले, हन्ति = घात करना ,

मघा से पाँच नक्षत्र ( मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, हस्त और चित्रा )तक तृतीय मण्डल होता है। इसमें उदित अथवा अस्त शुक्र धान्य (अनाज) को नाश करने वाला, दुर्भिक्ष और चोरों का भय करने वाला, नीच कर्म करने वालों की उन्नति करने वाला तथा वर्णसंकरों की उत्पत्ति करने वाला होता है। यदि इस मण्डल में स्थित शुक्र अन्य ग्रहों से आक्रान्त हो तो वृक्ष, शबर, शूद्र, पुण्ड़, पश्चिम शूलिक देश और वन में रहने वाले, द्रविड तथा समुद्रतीर में रहने वालों का नाश करता है। यहॉ नाश का आशय कष्ट है।

**चतुर्थ मण्डल फल**

**स्वात्याद्यं भत्रितयं मण्डलमेतच्चतुर्थमभयकरम्।**
**ब्रह्मक्षत्रसुभिक्षाभिवृद्धये मित्रभेदाय ॥**

**अत्राक्रान्ते मृत्युः किरातभर्तुः पिनष्टि चेक्ष्वाकून् ।**
**प्रत्यन्तावन्तिपुलिन्दतङ्गणान् शूरसेनांश्च**

प्रतिपदार्थ- स्वात्याद्यम् = स्वाति आदि पूर्व नक्षत्र, भत्रितयम् = नक्षत्र त्रय(स्वाति, विशाखा अनुराधा ) चतुर्थमण्डलम् स्वाती विशाखा अनुराधा नक्षत्रों का चतुर्थ मण्डल, अभयकरम् = अभय प्रदान करना, ब्रह्म = विप्र, क्षत्र = क्षत्रिय, सुभिक्षम् = शुभकर ,अभिवृद्धये = वृद्धिक, मित्रभेदाम् = मित्रों में भेद, अत्राक्रान्तेः = दूषित,ग्रह से आक्रान्त , मृत्युः = मृत्युकारक, किरातभर्तुः = किरातों के अधिपति, इक्ष्वाकून = इक्ष्वाकु जन, प्रत्यन्ताः = सीमान्त वासी, अवन्तयः = उज्जैनी वासी, पुलिन्दा: = पुलिन्द जन, तङ्गणाः = तङ्गण जन, शूरसेना: = शूरसेन जन।

स्वाती से तीन नक्षत्र ( स्वाती, विशाखा और अनुराधा ) तक चतुर्थ मण्डल होता है। यदि इसमें शुक्र का उदय या अस्त हो तो ब्राह्मण और क्षत्रियों के लिये शुभकर तथा उन्नति करने वाला होता है। परन्तु मित्रों में परस्पर द्वेष उत्पन्न कराता । यदि इस मण्डल में स्थित शुक्र किसी अन्य ग्रह से आक्रान्त हो तो किरातों के स्वामी की मृत्यु, इक्ष्वाकु वंश में उत्पन्न, प्रत्यन्त ( म्लेच्छ देश ), उज्जैन, पुलिन्द, तङ्गण और शूरसेन क्षेत्र में निवास करने वालों का नाश करता है , अर्थात् कष्ट होता है।

## 5.4.3 शुक्र के पंचम और षष्ठ मण्डल का लक्षण और फल

अब आप शुक्र के पंचम तथा षष्ठ मण्डल का लक्षण और फल का अध्ययन करेंगे । पंचम मण्डल में ज्येष्ठा, मूल पूर्वाषाढ़ा, और उत्तराषाढ़ा नक्षत्र है तथा षष्ठ मण्डल में धनिष्ठा, शतभिष,

पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी और रेवती नक्षत्र है। इन मंडलों में शुक्र का उदय अस्त हो तो क्या क्या फल होता है इस विषय में आप अध्ययन करेंगे।

**पञ्चम मण्डल फल**

**ज्येष्ठाद्यं पञ्चर्क्ष क्षुत्तस्कररोगदं प्रवाधयते ।**
**काश्मीराश्मकमत्स्यान् सचारुदेवीनवन्तींश्च ॥**

**अत्रारोहेद् द्रविडाभीराम्बष्ठत्रिगर्तसौराष्ट्रान्।**
**नाशयति सिन्धुसौवीरकांश्च काशीश्वरस्य वधः।।**

शब्दार्थ- ज्येष्ठाद्यम् = ज्येष्ठा आदि पूर्व नक्षत्र, पञ्चर्क्षम् = पांचवॉ नक्षत्र ज्येष्ठा,मूल,पूर्वाषाढ, उत्तराषाढ ,श्रवण, क्षुद् = दुर्भिक्ष, तस्कराः = चोर, रोगदम् = रोगदायक, काश्मीरान् = काश्मीर के लोग, अश्मकान् = अश्मक प्रदेश के लोग, मत्स्यान् = मत्स्य प्रान्त जन, चारुदेवीन् = चारुदेव नदी तटवर्ति जन, अवन्तीन् = उज्जैन वासी, प्रवाधयते = पीडित करना, आरोहेद् = उपर से , द्रविडान् = द्रविड प्रान्त के जन, आभीरान् = आभीर जन, अम्बष्ठान् = = अम्बष्ठ प्रदेश वासी, त्रिगर्तान् = त्रिगर्त प्रान्तके जन, सौराष्ट्रान् = सौराष्ट्र प्रान्त के जन, सिन्धुः = सिन्धु प्रदेश जन, सौवीरक = सौवीरक प्रदेश जन, नाशयति = क्षय करता है, काशीश्वरस्य = काशी राज का ,वधः = मरण।

ज्येष्ठा से पाँच नक्षत्र ( ज्येष्टा, मूल, पूर्वापाढा, उत्तराषाढा और श्रवण ) तक पंचम मण्डल होता है। यदि इसमें शुक्र का उदय या अस्त हो तो अशुभकारी, चोर और रोग का भय होता है ,तथा काश्मीर, अश्मक, मत्स्य, चारुदेवी नदी के तट और उज्जैनी प्रदेश वासियों को पीडित करता है। यदि इस मण्डल में स्थित शुक्र किसी अन्य ग्रह से आक्रान्त हो तो द्रविड, आभीर (शबर प्रदेश), अम्बष्ठ प्रदेश, त्रिगर्त, सौराष्ट्र, सिन्धु और सौवीरक प्रदेशवासियों का तथा काशिराज का नाश करता है, अर्थात् कष्ट प्ररदान करता है।

**षष्ठ मण्डल फल**

**षष्ठं षण्नक्षत्रं शुभमेतन्मण्डलं धनिष्ठाद्यम् ।**
**भूरिधनगोकुलाकुलमनल्पधान्यं क्वचिद् सभयम् ।।**

**अत्रारोहेच्छूलिकगान्धारावन्तयः प्रपीड्यन्ते ।**
**वैदहवधः प्रत्यन्तयवनशकदासपरिवृद्धिः।।**

शब्दार्थ- धनिष्ठाद्यं = धनिष्ठा आदि पूर्व नक्षत्र , षण्नक्षत्रम् = धनिष्ठा, शतभिष ,पूर्वाभाद्रापदा , उत्तरभाद्रपदा, रेवती,अश्विनी नक्षत्र, षष्ठमण्डलम् = शुक्र का षष्ठ मण्डल, शुभम् = शुभ फल , धनम् = वित्त, गोकुलानि = गोधन, अनल्पधान्यम् = कुत्रचिद् स्थाने। भूरि प्रचुरधान्यसंयुक्तम्। सभयम् भयेन सह अर्थात् सभयम् । अत्र मण्डलेऽस्मिन् आरोहेत् = प्रचुर धान्य से संयुक्त, शूलिकाः = शूलिक प्रान्त के जन, गान्धारा = गान्धार प्रान्त के जन, अवन्तयः = उज्जैन वासी, प्रपीड्यन्ते = कष्ट को प्राप्त करते है, वैदेहः = मिथिला वासी, प्रत्यत्ता: = गुहा में वास करने वाले, यवनाः = म्लेच्छ जन, परिवृद्धिः = समृद्धि, शकाः = शक जन ,दासाः = नौकर- दास, वधः = मरण।

धनिष्ठा से छः नक्षत्र ( धनिष्ठा, शतभिष, पूर्वाभाद्रपदा, उत्तराभाद्रपदा, रेवती और अश्विनी ) तक

षष्ठ मण्डल है। इसमें यदि शुक्र का उदय या अस्त हो तो शुभ होता है, पृथ्वी बहुत धन, गौ और आनाजों से परिपूर्ण होती है, परन्तु कहीं-कहीं पर भय की मात्रा रहती है। यदि इस मण्डल में शुक्र किसी ग्रह से आक्रान्त हो तो शूलिक, गान्धार, उज्जैन इन प्रदेशों में स्थित मनुष्यों को पीड़ा होती है। विदेह प्रदेश (मिथिला) स्थित जनों का मरण होता है तथा गुहा में निवास करने वाले, यवन, शक और दासों की वृद्धि होती है।

## 5.4 शुक्र के नक्षत्रभेदन का फल

अब आप शुक्र के नक्षत्र भेदन का फल का अध्ययन करेंगे। सबसे पहले यह जानना आवश्यक है कि भेदन क्या होता है ? भेदन को छेदन या पार करने के रूप में ग्रहण किया जाता है। कृतिकादि नक्षत्र पर नक्षत्रों जब शुक्र जाता है अर्थात् नक्षत्रों के ऊपर संचरण करता है तो उसको भेदन कहते हैं।

### 5.4.1 कृतिका से मघा पर्यन्त शुक्रभेदन का फल

यदि शुक्र कृतिका नक्षत्र का भेदन करते हुए गमन करे तो नदियों के द्वारा गड्ढा युक्त सड़कें लुप्त हो कर समाप्त हो जाती हैं अर्थात् नदी की बाढ़ से पृथ्वी भर जाती है जिससे सङके समान हो जाती है।

यदि शुक्र रोहिणी सकट का भेदन करते हुए गमन करे तो, ब्रहम हत्या करने वाले के तरह कपाली की तरह पृथ्वी व्रत धारण करती है। अर्थात् जिस तरह ब्रहम हत्या करने वाले मनुष्य पाप शांति के लिए स्मृति आदि के कथन के अनुसार केश और अस्थि खंडों को धारण करके कपालिक व्रत धारण करते हैं उसी तरह के अस्थि खंडों से व्याप्त होकर पृथ्वी कापालीक की तरह व्रत धारण करती है। रोहिणी सकट का भेदन कब होता है यह जानना आवश्यक होता है, जब वृष राशि के 17 अंश पर जिस ग्रह का दक्षिण सर 2 अंश से अधिक होता है तो रोहिणी सकट का भेदन होता है जिसका विवेचन सिद्धान्तादि ग्रन्थों में किया गया है।

यदि शुक्र मृगशिरा नक्षत्र का भेदन करें तो रस से युक्त फल और अनाजों का क्षय होता है। यदि आर्द्रा नक्षत्र में भेदन करे तो कौशल तथा कलिंग प्रदेश का नाश और अधिक वर्षा होती है।

शुक्र यदि पुनर्वसु नक्षत्र का भेदन करते हुए गमन करे तो अस्मत और विदर्भ प्रदेश में उपद्रव होता है। यदि शुक्र पुष्य नक्षत्र का भेदन करते हुए गमन करें तो अधिक वर्षा तथा विद्याधरों के युद्ध में युद्ध होता है अर्थात् इच्छाधारी विद्या को धारण करने वालों से युद्ध अति व्याप्त हो जाता है।

शुक्र आश्लेषा नक्षत्र को भेदन करते हुए गमन करता है तो लोगों को सर्पों से अत्यधिक पीड़ा होती है। अर्थात् जीव जंतु लोगों को परेशान करते हैं। तथा मघा नक्षत्र को भेदन करते हुए गमन करते हैं तो हस्ती पति पीड़ित और अतिवृष्टि करता है। अर्थात् हाथी के रखवाल को पीडा तथा वर्षा अत्यधिक होती है।

### 5.4.2 पूर्वाफाल्गुनी से मूल पर्यन्त शुक्रभेदन का फल

पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र को भेदन करते हुए शुक्र गमन करे तो शाबर पुलिन्द जनों का नाश और अत्यधिक वर्षा होती है। उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र का भेदन करते हुए शुक्र गमन करें तो कुरु प्रदेश

में निवास करने वाले, जंगल में निवास करने वाले ,पंचालों का नाश होता है तथा अत्यधिक वृष्टि होती है।

हस्त नक्षत्र में शुक्रभेदन करते हुए गमन करे तो कौरव और चित्रकारों को पीड़ा होती है । तथा वर्षा का अभाव होता है । चित्रा नक्षत्र में शुक्रभेदन करते हुए गमन करते हैं तो कुऑ बनाने वाले और पक्षियों को पीड़ा होती है तथा अच्छी वर्षा होती है।

स्वाति नक्षत्र में को भेदन करते हुए शुक्र गमन करे तो अतिवृष्टि तथा दूत ,व्यापार कर्म करने वाले ,नाव चलाने वाले इनमें उपद्रव फैलता है अर्थात् अशांत रहते हैं । विशाखा नक्षत्र को भेदन करते हुए शुक्र गमन करते हैं तो अच्छी दृष्टि होती है तथा व्यापार कर्म करने वालों को पीड़ा होती है।

अनुराधा नक्षत्र को भेदन करते हुए शुक्र गमन करते हैं तो क्षत्रियों में विरोध होता है ।यदि जेष्ठा नक्षत्र को भेदन करते हुए शुक्र गमन करते हैं तो क्षत्रिय जातियों में प्रधान का नाश होता है। यदि शुक्र मूल नक्षत्र को भेदन करते हुए गमन करते हैं तो प्रधान वैद्यों का नाश होता है ।

### 5.4.3 पूर्वाषाढ़ा से भरणी पर्यन्त शुक्रभेदन का फल

पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र को भेदन करते हुए शुक्र गमन करे तो जल में उत्पन्न जीवो को पीड़ा होती है । शुक्र यदि उत्तराषाढ़ा को भेदन करते हुए गमन करे तो रोगों की उत्पत्ति होती है । श्रवण नक्षत्र को भेदन करते हुए संचार करें तो कान की पीड़ा होती है । धनिष्ठा नक्षत्र को भेदन करते हुए संचरण करें तो पाखंडिओं में भय उत्पन्न होता है।

शताभिषा नक्षत्र को भेदन करते हुए शुक्र गमन करे तो मदिरा आदि का क्रय विक्रय करने वाले को पीड़ा होती है । पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र को भेदन करते हुए शुक्र गमन करे तो जुआरी लोग गुरु तथा पंजाब प्रदेश में स्थित मनुष्यों को पीड़ा होती है ,और अत्यधिक वर्षा भी होती है।

उत्तराभाद्रपद नक्षत्र को भेदन करते हुए शुक्र संचरण करे तो फल- मूलों का नाश होता है। रेवती नक्षत्र को भेदन करते हुए शुक्र गमन करे तो पथिकों को पीडा होती है। अश्विनी नक्षत्र को भेदन करते हुए शुक्र संचरण करें तो घोड़ा पालकों को तथा भरणी नक्षत्र को भेदन करते हुए शुक्र गमन करे तो किरात तथा यवनों को पीड़ा होती है।

## 5.5 सारांश

प्रिय अध्येता ? आपने शुक्रचार में सर्वप्रथम शुक्र के नव वीथी , तीन मार्ग , और छः मंडलों का लक्षण तथा फल जाना । आपने वीथी का अर्थ भी जाना जिसको मार्ग अथवा वल्ली भी कहते हैं, जिनका नाम क्रमशः नाग गज ऐरावत, वृष, गो, जरद्गव मृग, अज और दहन है इन प्रत्येक वीथियो में नक्षत्रों का समावेश किया गया है तीन मार्ग तथा छः मंडलों का वर्णन भी किया गया है । जिसमें पहले मण्डल में भरणी से 4 नक्षत्र, दूसरे मण्डल में आर्द्रा से 4 नक्षत्र, तृतीय मण्डल में मघा से 5 नक्षत्र ,चतुर्थ मण्डल में स्वाति से तीन नक्षत्र ,पंचम मण्डल में ज्येष्ठा से 5 नक्षत्र और षष्ठ मण्डल में धनिष्ठा से 6 नक्षत्रों को विभक्त किया गया है जिनका लक्षण और फल आपने संहिता शास्त्र में वर्णित प्रमाणिक फल जाना। तत्पश्चात शुक्र के उदय का फल भी जाना जिसमें शुक्र सूर्यास्त के पहले और सूर्योदय के बाद दिख जाए तो पृथ्वी पर रहने वाले प्राणियों के लिए अशुभकारी होता है। आपने नक्षत्रों के भेदन से शुक्र का फल जाना अर्थात्

शुक्र जिन जिन नक्षत्रों का भेदन करते हैं उन उन नक्षत्रों का फल मनुष्यों के ऊपर या जीव जंतुओं के ऊपर पड़ता है जिन का अध्ययन आपने बृहद रूप से भली-भांति किया है। शुक्र यदि चतुर्दशी अमावस्या तथा कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि में उदय अथवा अस्त को प्राप्त होता है तो पृथ्वी जल से भर जाती है। शुक्र के अस्त होने से विविध मुहूर्तो का अभाव हो जाता है जिसका अध्ययन आपने किया है । शुक्र विविध प्रदेशों के व्यक्तियों के स्वामी होते हैं जनका वर्णन ग्रहभक्तियोगाध्याय में मिलता है, जिन्हें आप अध्ययन किये है । आपने इस इकाई में पौराणिक रूप से शुक्र के विषय में आपने जाना की शुक्र का नाम कैसे पड़ा तथा वे किसके गुरु हैं। ज्योतिष शास्त्रीय दृष्टि से शुक्र का स्वरूप जाना की शुक्र सूर्य के ही सापेक्ष भ्रमण करते हैं अर्थात् सूर्य एक महा युग में 4320000 भगण पुरा करते हैं तो उसी के ही समान शुक्र भी भ्रमण करते हैं । शुक्र का शीघ्रोच्च भगण एक महा युग में 7022376 योजना है । शुक्र ग्रह मंद फल तथा शीघ्र फल संस्कारों से स्पष्ट होते हैं । आधुनिक सिद्धांतों एवं वैज्ञानिकों के दृष्टि से भी शुक्र के विषय में आपने भली-भांति जाना की सूर्य से शुक्र की दूरी 108000000 किलो मीटर है तथा ब्यास मान 12104 किलो मीटर है । शुक्र अपने कक्षा में अक्षभ्रमण 243 करते हैं तथा सूर्य के चारों ओर भ्रमण करने में 225 दिन लगाते हैं । इनका कोई भी उपग्रह नहीं है शुक्र के समस्त गुणों का आपने अध्ययन किया है । तत्पश्चात आपने शुक्र के वर्ण का लक्षण और फल जाना है जिसमें शुक्र का वर्ण अग्नि रक्त या सुवर्ण के समान दिखे तो क्रमशः अग्नि का भय, शस्त्र का भय, और रोग का भय होता है । यदि शुक्र का वर्ण सुंदर तथा विकार रहित दिखाई दे तो प्रजाओं के लिए सुखकर होता है। आपने इसके बाद शुक्र के प्रथम मण्डल से लेकर षष्ठ मण्डल तक का लक्षण और फल का अध्ययन किया तथा कृतिका नक्षत्र से भरणी पर्यंत तक शुक्रभेदन का फल जाना। अतः आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि इस अंक में वर्णित आदित्य चार ,चंद्र चार, बुध चार, बृहस्पति चार तथा शुक्रचार का अध्ययन आप सभी- भली भाँति किए होंगे।

## 5.6 शब्दावली

| | | |
|---|---|---|
| दहन | - | अग्नि |
| शिव | - | कल्याण |
| न्यून | - | अल्प |
| सित | - | शुक्र |
| विचरण | - | भ्रमण |
| गद | - | रोग |

## 5.7 सन्दर्भ ग्रंथ

बृहत्संहिता- श्री अच्युतानन्द झा -चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी

वशिष्ठ संहिता - डॉ गिरिजा शंकर शास्त्री- चौखम्भा संस्कृत भवन, वाराणसी

ज्योतिष सिद्धान्तमञ्जूषा - डॉ. विनय कुमार पाण्डेय- चौखम्बा सुभारती प्रकाशन वाराणसी

प्राच्यविद्या परिशीलन - डॉ. मीनाक्षी मिश्रा- नैसर्गिक शोध संस्था वाराणसी

कृषि-पराशर- प्रो. रामचन्द्र पाण्डेय मोतीलाल बनारसी दास

## 5.8 बोधप्रश्न

1. शुक्रचार का परिचय लिखिए।
2. शुक्र के वर्ण का लक्षण और फल लिखिए।
3. शुक्र के नव वीथियों का वर्णन कीजिए।
4. शुक्र के पंचम और षष्ठ मण्डल का लक्षण और फल लिखिए।
5. शुक्र के नक्षत्र भेदन का फल लिखिए।
6. पूर्वाफाल्गुनी से मूल पर्यंत शुक्रभेदन का फल लिखिए।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY